सुकरात (470-399 ई०पू०)

सुकरात का जन्म एथेन्स के एक निर्धन परिवार में हुआ था। वे सत्य और सदाचार के प्रतीक थे। सुकरात ने एथेन्स के नागरिकों को निःशुल्क नैतिक शिक्षा देने का प्रयास किया। उनके जीवन का लक्ष्य समाज में व्याप्त अज्ञानजन्य बुराइयों को दूर करके युवा पीढ़ी को सत्य और सदाचार की ओर प्रेरित करना था। सुकरात अपनी अन्तःकरण की पवित्र आवाज पर बल देते थे। उनकी उदारता, सौम्यता, व्यक्तित्व के खुलापन और ज्ञान की गरिमा से युक्त विनम्रता और भद्रता के कारण उनके शिष्यगण उन्हें बहुत पसन्द करते थे। सुकरात के दार्शनिक व्यक्तित्व की अमिट छाप उनके शिष्यों के मानस-पर अंकित हो गयी। यद्यपि उसे सर्वाधिक बुद्धिमान ग्रीक (The wisest of the Greek) कहा गया, तथापि सुकरात में इतनी भद्रता और विनम्रता थी कि उन्होंने अपने अज्ञान को व्यक्त करते हुए कहा - " मैं केवल एक ही बात जानता हूँ और वह यह है कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ।"

सुकरात के द्वारा लिखित कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। उनके जीवन-वृत्तान्त और विचारों का ज्ञान प्लेटो की रचनाओं से मिलता है। सुकरात ने सोफिस्टों के द्वारा प्रतिपादित विश्व की यान्त्रिक व्याख्या का खण्डन करके उसकी प्रयोजनमूलक-व्याख्या को प्रस्तुत किया। उनके विरुद्ध एथेन्स के युवाओं को गुमराह करके राज्य के विरुद्ध उकसाने और राष्ट्रीय देवताओं के प्रति उपेक्षा का भाव प्रकट करने का अभियोग लगाकर उन्हें कारागार में डाल दिया गया। तथा बाद में उन्हे 'विषपान के द्वारा' मृत्युदण्ड का आदेश दिया गया। सुकरात के विषपान के अवसर का हृदय-स्पर्शी चित्रण प्लेटो ने अपनी 'एपालॉजी' में किया है। सुकरात ने कहा- " हे एथेन्सवासियों! मैं तुम लोगों का सम्मान करता हूँ, किन्तु तुम लोगों की आज्ञा मानने की अपेक्षा मैं ईश्वरीय आदेश को स्वीकार करूँगा।

सद्गुणी के लिए स्वर्ग में कोई भय नहीं है। अब अलग होने का समय आ गया है। हम अपने-अपने मार्ग का अनुसरण करते हैं। मैं मृत्यु के पथ पर, और तुम जीवन के पथ पर कौन सा मार्ग श्रेष्ठ है इसे ईश्वर ही जानता है।" इस प्रकार उस युग के सबसे महान दार्शनिक, ज्ञानी और पुण्यात्मा सुकरात जहर का प्याला पी करके इस संसार से अलविदा हो गये।

सुकरात की दार्शनिक पद्धति :-

सुकरात ने ग्रीक विचारधारा के सर्वथा नवीन और सर्वोत्तम युग को जन्म दिया, जिसे ग्रीक दर्शन का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। सुकरात की विशिष्ट पद्धति को 'साक्रेटिक पद्धति' कहते हैं। इस पद्धति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :-

1. **सन्देहात्मक पद्धति (Sceptical method) :-** सुकरात की प्रसिद्ध उक्ति है कि 'अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं है' तात्पर्य यह है कि परीक्षित सत्य ही यथार्थ सत्य है तथा ग्रहणीय है। सत्य की परीक्षा के लिए हमें सन्देह से प्रारम्भ करना चाहिये। किसी समस्या पर सन्देह प्रकट करने के लिए सर्वप्रथम वे अपनी अज्ञानता या अनभिज्ञता दिखलाते थे।

2. **विवादात्मक पद्धति (Conversational method) :-** सुकरात वाद-विवाद के प्रेमी थे। वे प्रत्येक समस्या का समाधान वाद-विवाद से ही करते थे। यह वाद-विवाद प्रश्न तथा उत्तर के रूप में हुआ करता था। यह प्रश्नोत्तर केवल व्यर्थ नहीं अत्यन्त सार्थक तथा शिक्षाप्रद था। सुकरात का विश्वास था कि सम्पूर्ण ज्ञान आत्मा में निहित रहता है। हमारा काम केवल उसे आत्मा से निकालकर विकसित करना है। वाद-विवाद से अन्तर्निहित सत्यों का प्रकाश होता है।

3. प्रत्ययात्मक पद्धति (conceptual method) :- सुकरात के अनुसार ज्ञान प्रत्ययात्मक होता है। प्रत्यय किसी जाति के सभी व्यक्ति में पाये जाने वाले सामान्य तथा सार गुणों के अनुसार बनते है। प्रत्ययात्मक पद्धति को परिभाषात्मक पद्धति भी कहते है।

4. आगमनात्मक पद्धति (Inductive method) :- किसी वर्ग के विभिन्न व्यक्ति को देखकर तथा सभी में कुछ सामान्य गुणों का अवलोकन करते है। अन्त में कुछ उदाहरणों में साम्य के आधार पर एक सामान्य वाक्य विशेष उदाहरणों के निरीक्षण से प्राप्त होता है। यही आगमन है। परिभाषा आगम से ही बनती है।

5. निगमनात्मक पद्धति (Deductive method) :- किसी वर्ग के कुछ ज्ञात उदाहरणों के आधार पर सामान्य वाक्य बनाते है। परन्तु सामान्य वाक्य उस वर्ग के सभी असंख्य उदाहरणों के लिए भी समानतः सत्य माना जाता है। यही निगमनात्मक पद्धति कहलाता है।

सुकरात की ज्ञानमीमांसा तथा नीतिशास्त्र

सुकरात के अनुसार नैतिक जीवन ही परमशुभ है। सुकरात के दर्शन का मुख्य उद्देश्य नैतिकता के क्षेत्र में सार्वभौम तथा वस्तुनिष्ठ मानदण्डों की स्थापना करना था। इसके लिए वे ज्ञानमीमांसीय चिन्तन को ही आवश्यक मानते है। सुकरात बुद्धिवादी ज्ञानमीमांसा का प्रतिपादन करते है। उन्होंने सोफिस्टों की अनुभववादी ज्ञानमीमांसा के निराकरण करने का प्रयास किया। सुकरात का मानना था कि 'समस्त ज्ञान संप्रत्ययात्मक होता है।'

ज्ञान के आचारमूलक (व्यावहारिक) पक्ष पर विशेष बल देते है। उनके अनुसार ज्ञान और आचरण में एकरूपता होनी चाहिए। यदि उनमें एकरूपता (सामंजस्य) न हो तो ज्ञान के आधार पर आचरण करना संभव नहीं हो सकता है। सुकरात ने 'ज्ञान' शब्द का प्रयोग 'विवेक' (wisdom) के अर्थ में किया है। इस सन्दर्भ में उनका कथन प्रसिद्ध है - 'ज्ञान सद्गुण है। (Knowledge is virtue) जीवन का परम लक्ष्य सद्गुण है। सद्गुणी अथवा नैतिक जीवन ही मनुष्य के लिए परमश्रेय है। सुकरात ज्ञान को ही सद्गुण मानते है इसलिए उनके अनुसार ज्ञानी ही सद्गुणी व्यक्ति हो सकता है। ज्ञान और सद्गुण परस्पर अभिन्न तथा अविरोज्य है।